3-कैसे बने घर

वह स्थान जहाँ हम रहते हैं, हमारा घर (आवास) कहलाता है।घरहमेंसर्दी , गर्मी, वर्षाआदि से सुरक्षा प्रदान करता है। एक समय ऐसा भी था, जब मनुष्य के पास आज की भाँति रहने के लिए घर नहीं थे। वे पेड़ की शाखाओं, घनी झाड़ियों तथा गुफाओं में रहते थे। समय के साथ मनुष्य के रहन-सहन और खान-पान के तरीकों में बदलाव आया। पहले लोग मिट्टी से बने कच्चे घरों में रहते थे। इस तरह के घर की दीवारें मिट्टी से बनाई जाती थीं। घर की छत बनाने के लिए लकड़ी के फट्टे जोड़कर बनाए गए ढाँचे को चारों दीवार पर टिका दिया जाता था। बाद में उसे मिट्टी से लेप दिया जाता था। कहीं-कहीं पर घर की छत बनाने में खप्पर, नरिया, बाँस, घास-फूस आदि का भी उपयोग किया जाता था। इस प्रकार बने घर की फर्श पर मिट्टी में गोबर मिलाकर उसकी लिपाई की जाती थी। कुछ लोग घर बनाने में केवल घास-फूस तथा बाँस-बल्ली आदि का ही उपयोग करते थे। ऐसे घर को झोपड़ी कहा जाता है।

इसे भी जानें-

आज से लगभग ढाई हजार ई0पू0 विकसित सिंधु सभ्यता भारत की पहली नगरीय सभ्यता थी। इस सभ्यता की प्रमुख विशेषता थी सुनियोजित नगर एवं भवन निर्माण व्यवस्था तथा समुचित जल निकास प्रणाली।

पता कीजिए-

- आप अपने आस-पास किस तरह के घर देखते हैं ?
- आपका घर पक्का है या कच्चा है ?

कैसे बदले घर

आप अपने आस-पास कई तरह के घर देखते हैं। इनमें से कुछ घर कच्चे होते हैं तो कुछ पक्के। पक्के घर भी कई तरह के होते हैं, जैसे- एक मंजिला, दोमंजिला, बंगला, बहुमंजिला इमारतें आदि। समय बीतने के साथ-साथ घर के आकार, प्रकार तथा बनावट सामग्री में बदलाव
व विविधता आ गई है। अब घर बनाने में सीमेंट, पक्की ईंट, बालू, लोहे की सरिया, ग्रेनाइट पत्थर आदि का प्रयोग होने लगा है। इन सामग्रियों के इस्तेमाल से बने मकान की दीवार, छत, फर्श सभी पक्के एवं मजबूत होते हैं। ऐसे घर आँधी, तूफान आदि से कच्चे घर की तुलना में ज्यादा सुरक्षित होते हैं। आज से कुछ साल पहले तक घरों में शौचालय नहीं होते थे। शौच के लिए लोग घर के बाहर खाली जगहों या खेतों में जाते थे। किंतु अब लोग शौचालय का निर्माण तथा इसका उपयोग करने लगे हैं।

घर का स्वरूप झोपड़ी और कच्चे मकान से होता हुआ, विशाल और आलीशान भवनों तक पहुँचा है। किंतु घर चाहे जितना छोटा हो या बड़ा, कच्चा हो या पक्का, इसे स्वच्छ और व्यवस्थित रखना सबसे महत्त्वपूर्ण है। घर को स्वच्छ और व्यवस्थित रखने की जिम्मेदारी परिवार के सभी सदस्यों की होती है।

शिक्षक निर्देश- बच्चों से घर के विभिन्न हिस्सों जैसे- रसोई घर, आँगन, बरामदा आदि पर बातचीत करें तथा समय के साथ घर की बनावट में हुए बदलाव पर चर्चा करें।

घर से निकलने वाला कचरा

हमारे दैनिक जीवन के विभिन्न कार्यों के दौरान कई अनुपयोगी पदार्थ बचते हैं, जिन्हें हम कचरा या अपशिष्ट पदार्थ कहते हैं। जैसे- सब्जी व फल के छिलके, उपयोग के बाद बची हुई चाय की पत्ती, टॉफी, बिस्किट आदि के रैपर, पॉलीथीन की थैलियाँ आदि। इन्हें कुछ लोग कूड़ेदान में न फेंककर सड़क पर ही फेंक देते हैं। प्रायः घर से निकलने वाले कूड़े को दो भागों में बाँट सकते हैं- सड़ने वाला कूड़ा तथा न सड़ने वाला कूड़ा।

चर्चा करिये ----

- यदि आपके घर एवं आस-पास से यह कूड़ा न हटाया जाए तो क्या होगा ?
- यह हमें कैसे हानि पहुँचा सकता है ?

घर से निकलने वाले कूड़े-कचरे यदि इधर-उधर बिखरे रहे तो इससे गन्दगी फैलती है। अनेक हानिकारक कीड़े पनपते हैं। इससे दुर्गन्ध भी पैदा होती है तथा मक्खियाँ बैठती हैं इसके कारण अनेक बीमारियाँ फैलती हैं जो हमारे स्वास्थ्य पर बुरा असर डालती हैं। अतः कूड़े-कचरे का सही तरीके से निस्तारण करना स्वास्थ्य एवं स्वच्छता की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है।

कचरा निस्तारण

हम सभी अपने आस-पास कूड़े के निस्तारण की समस्या का सामना करते हैं। इसलिए यह आवश्यक है कि हम कचरा निस्तारण के लिए ऐसा तरीका अपनाएँ, जिससे हमारे परिवेश को नुकसान न पहुँचे तथा हम अपने गाँव/शहर को साफ-सुथरा रख सकें।

आइए करके सीखें-

अपने घर से निकलने वाले कचरे को दो समूहों में इस प्रकार पृथक करें कि प्रत्येक समूह में निम्न वस्तुएँ हों-

समूह एक- खराब फल, सब्जी के छिलके तथा फल के छिलके, खराब हुआ भोजन, उपयोग की हुई चायपत्ती, सूखी पत्तियाँ आदि।

समूह दो- पॉलीथीन की थैलियाँ, प्लास्टिक, काँच, लोहे के अनुपयोगी सामान आदि।

आप प्रत्येक समूह के कचरे को अलग-अलग गमले में डालकर मिट्टी से ढक दें। कुछ माह बाद दोनों समूह के कचरे के ऊपर से मिट्टी हटाकर उसमें हुए परिवर्तन को देखें। आप देखेंगे कि समूह एक का कचरा पूर्णतः सड़कर मिट्टी में मिल गया। मिट्टी में मिला हुआ यह कचरा पेड़-पौधे के लिए खाद की तरह काम करता है। जबकि समूह दो का कचरा सड़कर मिट्टी में नहीं मिला। सोचिए ऐसा क्यों हुआ ? इसका कारण यह है कि कूड़े-कचरे के रूप में फेंके गए प्लास्टिक, बैटरी, काँच, पॉलीथीन आदि सड़ते नहीं हैं। धीरे-धीरे ये कचरे के ढेर के रूप में एकत्र होकर हमारे पर्यावरण को नुकसान पहुँचाते हैं। अतः उचित होगा कि हम अपने घर से निकलने वाले कचरे को अलग-अलग कूड़ेदान में डालें।

कचरा प्रबन्धन

कचरा प्रबन्धन से तात्पर्य है कचरे का उचित निस्तारण। कचरा प्रबन्धन द्वारा हम मिट्टी में सड़ने योग्य कचरे से खाद तैयार कर सकते हैं। इसका उपयोग घर या विद्यालय के बगीचे में किया जा सकता है। जबकि मिट्टी में न सड़ने योग्य कचरे के निस्तारण हेतु **4R** का अनुसरण कर सकते हैं।

- **कम करना(REDUCE) -**अपनी आवश्यकता के अनुरूप ही सामान खरीदें।
- **मना करना(REFUSE)-** प्लास्टिक से बने सामानों एवं पॉलीथीन थैली के उपयोग से बचें।
- **पुनः प्रयोग(REUSE)-**बहुत सी वस्तुओं को हम अपनी समझदारी से पुनः उपयोग में ला सकते हैं, जैसे-पुरानी बाल्टियों के टूटने पर उसे कूड़ेदान या गमले के रूप में उपयोग में लाना।
- **पुनःचक्रित करना(RECYCLE)-** ऐसी वस्तुएँ जो पुनः चक्रित हो सकती हैं, उसे कबाड़ी वाले को दे दें, जैसे-पुराने कागज, समाचार पत्र, लोहे व काँच के टुकड़े आदि। पुर्नचक्रण के द्वारा बहुत से अपशिष्ट पदार्थों को गलाकर पुनः प्रयोग में लाया जा सकता है।

अभ्यास

1. सही कथन पर (ü) का और गलत पर (ग) का निशान लगाइए -

(क) घर हमें आँधी, तूफान और वर्षा से सुरक्षा प्रदान करता है। ( )

(ख) कच्चे घर की दीवारें ईंट और सीमेंट की बनी होती हैं। ( )

(ग) घरेलू कूड़ा खुले में न फेंककर कूड़ेदान में डालना चाहिए। ( )

(घ) पॉलीथीन का उपयोग हमारे पर्यावरण के लिए लाभदायक है। ( )

(ङ) मिट्टी में गल जाने वाला कचरा पौधों को पोषण देता है। ( )

2. आवास का क्या अर्थ है ?

3. पक्का घर बनाने में किन-किन सामग्रियों का प्रयोग होता है ?

4. अपशिष्ट पदार्थ किसे कहते हैं ?

5. घर को साफ-सुथरा रखना क्यों जरूरी है ?

6. घर में दो तरह का कूड़ेदान क्यों रखना चाहिए ?

7. कचरा प्रबन्धन के संबंध में 4R का क्या अर्थ है ?

प्रोजेक्ट वर्क

- पता कीजिए आपके घर में प्लास्टिक की कौन-कौन सी वस्तुओं का प्रयोग होता है ? उनके विकल्प के रूप में आप क्या उपयोग कर सकते हैं ?

- किसी कबाड़ी से बातचीत करके पता कीजिए कि वह कौन-कौन सी वस्तुओं को कबाड़ के रूप में लेता है ? उन वस्तुओं का वह क्या करता है ?